जैनी

Jaini | A revival of Jain Kalpasūtra manuscript style created in 1503, Jaini is a contemporary calligraphic Devanāgarī typeface with distinct features, available in two styles; Jaini (horizontal conjuncts) & Jaini Purva (vertical conjuncts).

Designed by:
Girish Dalvi & Maithili Shingre

To download source files, please visit:
https://github.com/EkType/Jaini/releases

To download fonts, please visit:
www.ektype.in

Ek Type

एक

www.ektype.in

जैनी पूर्वा

With
traditional
conjuncts

अक्कल·जिल्ला·ध्वनी·कच्चा·ब्राह्मण·शब्द
चन्दन·मत्स्य·क्वालिटी·विंध्य·ह्रास·कल्ला
वास्तव·पुष्कराज· संन्यास·अम्बर·चन्द्रमा

जैनी

With
contemporary
conjuncts

अक्कल·जिल्ला·ध्वनी·कच्चा·ब्राह्मण·शब्द
चन्दन·मत्स्य·क्वालिटी·विंध्य·ह्रास·कल्ला
वास्तव·पुष्कराज· संन्यास·अम्बर·चन्द्रमा

ॐऄअआइईउऊऋऌऍऎएऐऑऒओऔकखगघ
ङचछजझञटठडढणतथदधनऩपफबभमयर
ऱलळऴवशषसहक़ख़ग़ज़ड़ढ़फ़य़ॠॡअंअः।
॥०१२३४५६७८९॰अँअंआंऔंअुअूज़ुमग्रज्ञ?ड्रब्र
क्षज्ञलशक्ख्ग्घ्ङ्च्छ्ज्झ्ञ्ट्ठ्ड्ढ्ण्त्थ्द्
ध्न्ऩ्प्फ्ब्भ्म्य्र्ऱ्ल्ळ्ऴ्व्श्ष्स्ह्क़्ख़्ग़्ज़्ड़्
ढ़्फ़्य़्श्ल्क्ष्ज्ञ्कुखुगुघुङुचुछुजुझुञुटुठुडुढुणु
तुथुदुधुनुऩुपुफुबुभुमुयुरुरूलुळुऴुवुशुषुसुहुक़ु
ख़ुग़ुज़ुड़ुढ़ुफ़ुय़ुशुलुक्षुज्ञुकूखूगूघूङूचूछूजूझूञू
टूठूडूढूणूतूथूदूधूनूऩूपूफूबूभूमूयूरुरूलूळूऴूवू
शूषूसूहूक़ूख़ूग़ूज़ूड़ूढ़ूफ़ूय़ूशूलूकृखृगृघृङृचृछृजृ
झृञृटृठृडृढृणृतृथृदृधृनृपृफृबृभृमृयृलृळृऴृवृ
शृषृसृहृक़ृख़ृग़ृज़ृड़ृढ़ृफ़ृय़ृशृलृक्रख्रग्रघ्रङ्रच्रछ्रज्र
झ्रञ्रट्रठ्रड्रढ्रण्रत्रथ्रद्रध्रन्रप्रफ्रब्रभ्रम्रय्रर्रल्रळ्रव्रश्रष्र
स्रह्रक़्रख़्रग़्रज़्रफ़्रय़्रश्रल्रक्ष्रज्ञ्रश्रुश्रूश्रृश्र्क्षुज्ञुक्रख्रग्र
घ्रङ्रच्रछ्रज्रझ्रञ्रट्रठ्रड्रढ्रण्रत्रथ्रद्रध्रन्रप्रफ्रब्रभ्रम्रय्र
ल्रळ्रव्रश्रष्रस्रह्रक़्रख़्रग़्रज़्रफ़्रय़्रक्ष्रज्ञ्रष्ट्रक्स्ट्रङ्क्यङ्ख्य
ङ्ग्यङ्घ्यङ्क्ष्यद्घ्यद्द्यद्ध्यद्ब्यद्भ्यद्म्यद्व्यध्यन्यभ्यश्र्यष्ट्य
ष्ट्वष्ठ्यछ्यछ्वङ्कङ्गङ्मड्यट्टट्ठट्यद्वठ्ठठ्यड्डड्ढड्यढ्ढढ्य

द्र द्द द्ध द्न द्ब द्भ द्म द्य द्व क्ष्म्य क्स्प्र क्स्प्ल स्क्र त्स्न्य त्प्ल्य

त्स्य स्म्य ब्स्ट्र त्त्य क्त क्त्र क्स्प्र क्व्य क्ष्म क्ष्य क्ष्व क्स्ट क्स्ड

क्स्त क्स्प ख्व्य ग्ध्व ग्ध्य ग्य्र ग्भ्य ग्य्र च्छ्व ङ्क्ष ङ्ख्य ङ्ख्व

ङ्ग्य ङ्घ्र ञ्च्य त्क्य त्क्र त्क्व त्क्ष त्ख्न त्ख त्त्य त्त्व त्न्य त्प्र त्प्ल

त्म्य त्र्य त्स्फ त्स्न त्स्य त्स्व न्क्स न्त्य न्त्व न्त्स न्थ्य न्थ्व द्व्र द्व्व

न्ध्य न्ध्व न्ध्व न्त्र न्भ्य न्भ्व न्म्य न्व्ह स्ट न्स्य न्ह्य प्त्य प्प्य ब्ज्य

ब्ध्व ब्भ्र ब्ल्य म्प्र म्ब्य म्ब म्भ्र म्भ्व ल्क्य ल्थ्य ल्द्र ल्ल्य ल्ड

ल्ह्य ष्क्र ष्ण्य ष्प्र ष्म्य स्क्र स्क्व स्त्य स्त्र स्त्व स्थ्य स्प्र स्म्य

ह्म्य क्क क्ख क्च क्ज क्झ क्ट क्ण क्त क्थ क्द क्न क्प क्फ

क्म क्य क्ल क्व क्श क्स ख्ख ख्न ख्र ख्म ख्य ख्व ख्श ग्ग ग्घ

ग्ज ग्ण ग्द ग्ध ग्न ग्ब ग्भ ग्म ग्य ग्ल ग्व ग्स घ्न घ्म घ्य च्च च्छ

च्न च्म च्य ङ्क ङ्ज ङ्झ ङ्ट ङ्ड ङ्त ङ्द ङ्न ङ्ब ङ्म ङ्य ङ्व

झ्झ झ्न झ्म झ्य ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्श ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण ण्म

ण्य ण्व ण्ह त्क त्ख त्त त्थ त्न त्प त्फ त्म त्य त्ल त्व त्स थ्थ थ्य

थ्व ध्न ध्म ध्य ध्व न्क न्ग न्च न्छ न्ज न्ट न्ड न्त न्थ न्द न्ध न्न न्प न्फ

न्भ न्म न्य न्व न्श न्स न्ह प्छ प्ट प्त प्न प्प प्फ प्म प्य प्ल प्व प्श प्स

फ्ज फ्ट फ्त फ्थ फ्प फ्फ फ्य फ्ल फ्श ब्ज ब्झ ब्ड ब्न ब्द ब्ध

ब्न ब्ब ब्भ ब्य ब्ल ब्व ब्श ब्स ब्ज़ भ्य भ्ल भ्व म्त म्द म्न म्प म्फ म्ब म्भ

म्म म्य म्ल म्व म्श म्स म्ह य्य य्व य्ह ल्क ल्ख ल्ग ल्च ल्ज ल्ट

ल्ठ ल्ड ल्ढ ल्त ल्थ ल्द ल्प ल्फ ल्ब ल्भ ल्म ल्य ल्ल ल्व ल्श ल्स

ल्ह ल्ड़ ळ्य ळ्ळ व्ड व्य व्ल व्व व्ह श्क श्च श्छ श्ट श्त श्न श्म श्य

श्ल श्व श्श श्क़ ष्क ष्ट ष्ठ ष्ण ष्प ष्फ ष्म ष्य ष्व ष्ष स्ख स्त स्ट स्न

स्थ स्द स्न स्प स्फ स्ब स्म स्य स्ल स्व स्स ह्ण ह्न ह्म ह्य ह्ल ह्व

क़्त क़्फ क़्ब क़्म क़्क क़्फ़ ख़्न ख़्म ख़्य ख़्व ख़्श ख़्स ड़्य ड़्ड़

ङ्क फ़्स फ़्ड़ फ़्फ़ ल क्स्ल त्ल ङ्क्ष क्श ख्श ग्ल ञ्श त्ल न्श

प्ल प्श फ्ल फ्श ब्ल ब्श भ्ल म्ल म्श ल्ल व्ल श्क श्छ श्ट श्म श्य

श्ल श्श श्क़ स्ल ह्ल ख़्श ल्श क्कु क्कू क्कृ क्तु क्तू क्तृ क्यु क्यू क्त्रु

क्त्रू ख्यु ग्यु ग्यू ग्यृ घ्यु घ्यू ट्टु ट्टू ट्ठु ट्ठू ट्यु ट्यू ठ्यु ड्डु ड्डू ड्यु ड्यू ड्डु ड्डू

त्तु त्तू त्तृ त्नु त्नू त्यु त्यू त्रु त्रू थ्यु थ्यू द्गु द्मू द्मृ द्दु द्दू द्दृ द्धु द्धू द्धृ द्नु द्नू द्बु

द्बू द्बृ द्भु द्भू द्यु द्यू द्यृ द्वु द्वू द्वृ द्दु द्दू द्दृ ध्यु ध्यू न्नु न्नू न्यु न्यू न्यु न्यू

प्तु प्तू प्तु प्यु प्यू प्यृ फ्तु फ्तू ब्यु ब्यू भ्यु भ्यू भ्यृ म्यु म्नु म्नू ल्लु ल्लू ल्लृ व्यु श्चु श्चू

श्चु श्नू श्यु श्यू श्यृ श्लु श्लू ष्टु ष्टू ष्ठु ष्ठू ष्णु ष्णू ष्पु ष्पू ष्यु ष्यू स्यू ह्नु ह्यु ह्यू

ह्नु ह्नू ज ज़ ज़् ज़् ज़्ज़ु ज़ू ज़ृ ज़ु ज़ू ज़ृ ज़्र ज़्र ज्झ ज्ज्य ज्ज्व

ज्ज्य ब्ज्य क्ज गज ज्क ज्ज ज्झ ज्ट ज्ड ज्त ज्द ज्र ज्ब

ज्म ज्य ज्व ज्ज ल्ज फ्ज ब्ज ब्ज़ ल्ज ल्ज़ स्ज ज़्य ज़्ज़ फ़्ज़

ते तै ते तै तॅ तॉ तो तो तौ तौ ता ती ति तें तें तें तेँ तैँ तं ति

ती ते तै र्त र्तं ! # $ % ( ) * + , - . / 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 : ; <

= > ? [\ ] _ { | } £ ¤ ¥ © ® ° × ÷ ‘ – ’ — “ ± ” • … ₹ ™ − ◌

॥श्रीरामसमर्थ॥ ॥श्रीमत् दासबोध॥
दशक एकोणविसावा : शिकवण समास पहिला :

लेखनक्रियानिरुपण

ब्राह्मणें बाळबोध अक्षर। घडसुनी करावें सुंदर। जें देखतांचि चतुर। समाधान पावती॥१॥ वाटोळें सरळें मोकळें। वोतलें मसीचें काळें। कुळकुळीत वोळी चालिल्या ढाळें। मुक्तमाळा जैशा॥२॥ अक्षर मात्र तितुकें नीट। नेमस्त पैस काने नीट॥ आडव्या मात्रा त्या दि नीट। आर्कुलीं वेलांड्या॥३॥ पहिलें अक्षर जें काढिलें। ग्रंथ संपेतों पाहात गेलें॥ येका टांकेंचि लिहिलें। ऐसें वाटे॥४॥ अक्षराचें काळेपण। टांकाचें ठोसरपण। तैसेंचि वळण वांकाण। सारिखेंचि॥५॥ वोळीस वोळी लागेना। आर्कुली मात्रा भेदीना॥ खालिले वोळीस स्पर्शेना। अथवा लंबाकार॥६॥ पान शिषानें रेखाटावें। त्यावरी नेमकचि ल्या हावें। दुरी जवळी न व्हावें। अंतर वोळींचे॥७॥ कोठें शोधासी आडे ना। चुकी पाहातां सांपडेना। गरज केली दें घडेना। लेखकापसुनी ॥८॥ ज्याचें वय आहे नूतन। त्यानें ल्याहावें जपोन॥ जनासी पडे मोहन। ऐसें करावें॥९॥ बहु बारिक तरुणपणीं। कामा नये म्हातारपणीं। मध्यम लिहिण्याची करणी। केली पाहिजे॥१०॥ भोंवतें स्थळ सोडून द्यावें। मधेंचि चमचमित ल्याहावें। कागद झडतांहि झडावें। नलगेचि अक्षर॥११॥ ऐसा ग्रंथ जपोनी ल्याहावा। प्राणी मात्रास उपजे देवा। ऐसा पुरुष तो पाहावा। म्हणती लोक॥१२॥ काया बहुत कष्टवावी। उत्कट कीर्ति उरवावी॥ चटक लाउनी सोडावी। कांहीं येक ॥१३॥ घट्य कागद आणावे। जपोन नेमस्त खळावे॥ लिहिण्याचे सामे असावे। नानापरी॥१४॥ सुद्या कातद्या जागाईत। खळी घोंटाळें तागाईत। नाना सुरंग मिश्रित। जाणोनि घ्यावें॥१५॥ नाना देसीचे बरु आणावे। घटी बारिक सरळे घ्यावे। नाना रंगाचे आणावे। नाना जिनसी॥१६॥ नाना जिनसी टांकतोडणी। नाना प्रकारें रेखाटणी।

वत्सला मातृभूमि!

“हे केशव, तो क्या अब युद्ध नहीं होगा?”

धनुष्यबाण

निषेवते प्रशस्तानी निन्दितानी न सेवते।

कलात्मक रुप

समास दहावा : विवेकलक्षणनिरुपण ॥ श्रीरामसमर्थ ॥ जेथें अखंड नाना चाळणा। जेथें अखंड नाना धारणा। जेथें अखंड राजकारणा। मनासी आणिती॥१॥ सृष्टीमधें उ त्तम गुण। तितुकें चाले निरुपण। ।निरुपणाविण क्षण। रिकामा ◆ नाहीं॥२॥ चर्चा आशंका प्रत्यो त्तरें। कोण खोटें कोण खरें। नाना वगत्वें शास्त्राधारें । नाना चर्चा॥ भक्तिमार्ग विशद कळे। उपासनामार्ग आकळे। ज्ञानविचार निवळे। अं संगीत उत्तरें। नेमक बोलतां अंतरें। निववी सकळांचीं॥६॥ आवडी ला

अनुस्वारश्चान्त्यरुपं बिन्दुरुत्तररुपं

न दृश्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते।
गंगो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पंडित उच्यते॥

1

जो अपना आदर-सम्मान होने पर ख़ुशी से फूल नहीं उठता,
और अनादर होने पर क्रोधित नहीं होता तथा गंगाजी के कुण्ड के
समान जिसका मन अशांत नहीं होता, वह ज्ञानी कहलाता है।

Who does not take pride after being honored;
does not show grief on being insulted, and whose
heart is like Ganga Sagar (i.e. vast and deep with no
regrets) can be called a truly educated person.

१

एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुर्मुक्तो धनुष्मता।
बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा हन्याद् राष्ट्रम सराजकम्॥

2

किसी धनुर्धर वीर के द्वारा छोड़ा हुआ बाण संभव है किसी
एक को भी मारे या न मारे। मगर बुद्धिमान द्वारा प्रयुक्त की हुई
बुद्धि राजा के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र का विनाश कर सकती है।

If an archer shoots an arrow then there is a chance
that it might miss or kill a single person, but the trick
implemented by some intelligent person might
put an end to king and his whole kingdom.

२

एकमेवाद्वितीयम तद् यद् राजन्नावबुध्यसे।
सत्यम स्वर्गस्य सोपानम् पारवारस्य नैरिव॥

3

राजन! जैसे समुद्र के पार जाने के लिए नाव ही एकमात्र साधन
है, उसी प्रकार स्वर्ग के लिए सत्य ही एकमात्र सीढ़ी है,
कुछ और नहीं, किन्तु आप इसे नहीं समझ रहे हैं।

King! Like you need a ship to travel across the ocean,
similarly truth is the only means to get into heaven.
Why are you unable to understand this simple fact.

३

Akhanda vertical and horizotal conjuncts

क्+ष्+म्+य=क्ष्म्य | क्+व्+य=क्व्य / क्ल्य

Akhanda forms for letter+belowbase mātrā

विद्या कामदुघा धेनुः सन्तोषो नन्दनं वनम्॥

Language alternates (Stylistic set 1)

शाळेत कल्ला केला > शाळेत कल्ला केला

Design alternates (Stylistic set 4, 5)

जो शृंगार-सज्जित > जो शृंगार-सज्जित

Abovebase mātrā alternates (Stylistic set 2)

क्रोध के समान दै। > क्रोध के समान दै।

Mātrā alternates (Stylistic set 3)

किती प्रपंची ते जन > किती प्रपंची ते जन